पत्रिका

व्याख्यान

बीएड अध्ययनशाला भवन में गांधी के दर्शन व देशभक्ति पर हुए व्याख्यामाला में अतिथियों ने कहा

सेवा ही देशभक्ति, सेवा में संतुष्टि है और सेवा से ही शक्ति मिलती है

जगदलपुर . शहीद महेंद्र शर्मा विश्वविद्यालय के बीएड अध्ययनशाला भवन में गांधी दर्शन एवं देशभक्ति पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पद्मश्री धर्मपाल सैनी उपस्थित थे। अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर मनोज कुमार श्रीवास्तव, विशिष्ट अतिथि कुलसचिव अभिषेक कुमार बाजपेई उपस्थित रहे।

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

मुख्य अतिथि धर्मपाल सैनी का स्वागत कुलपति द्वारा किया गया. स्वागत उद्बोधन डीन स्टूडेंट वेलफेयर डॉ. आनंद मूर्ति मिश्रा द्वारा किया गया। उनके द्वारा मुख्य अतिथि का परिचय देते बताया कि सैनी ने जीवन पर्यंत जनकल्याण तथा बालिकाओं की शिक्षा एवं खेलकूद के विकास पर कार्य किया। वह भारत के महान संत आचार्य विनोबा भावे के शिष्य रहे और उनके निर्देश पर 1976 में बस्तर आए थे। उनके मार्गदर्शन में बस्तर संभाग में माता रुकमणी के नाम पर अनेक आश्रम संचालित किए जा रहे हैं, जिसमें बस्तर क्षेत्र की बालिकाओं के शिक्षा एवं विकास के लिए कार्य किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय में हुए आयोजन में उपस्थित अतिथि व प्रबंधन ।

पौधरोपण कर किया समापन

आगंतुक अतिथियों व अन्य ने विश्वविद्यालय परिसर में पीपल का पौधरोपण किया। संचालन डॉ. रानी मैथ्यू एवं डॉ. सोहन कुमार मिश्रा व आभार कुलसचिव डॉ. अभिषेक कुमार बाजपेई ने माना।

देशभक्ति सेवा का भाव लिए होनी चाहिए

पद्मश्री धर्मपाल सैनी जी ने बताया कि देशभक्ति का अर्थ केवल त्याग नहीं है, बल्कि देश हित में ज्ञान, वस्तु, चरित्र आदि का उत्पादन भी देशभक्ति है. उन्होंने देशभक्ति को सेवा माना और तत्कालीन मध्यप्रदेश राज्य के मालवा क्षेत्र में पूर्व से ही उनके द्वारा बालिकाओं की शिक्षा के लिए स्कूल संचालित किए जा रहे थे। आचार्य संत विनोबा भावे के निर्देश पर बस्तर में बालिकाओं के शिक्षा के लिए बस्तर आए और बस्तर में बालिकाओं के शिक्षा की शुरुआत की। गांधी के दर्शन की छाप भारत के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक इतिहास में स्पष्ट देखने को मिलता है। गांधी ने सत्य का साक्षात्कार किया। वह ग्राम स्वराज की स्थापना करना चाहते थे. उन्होंने गुलामी, धर्म, जाति, संप्रदाय के आधार पर होने वाले भेदभाव और छुआछूत को समाप्त करना चाहते थे। देश और समाज के विकास के लिए रक्त, आंसू और पसीने बहाने के लिए युवाओं को हमेशा तैयार रहना चाहिए। कुलपति मनोज कुमार श्रीवास्तव ने बस्तर क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए कार्य को आगे बढ़ाने के लिए जरूरी बताया। उन्होंने बस्तर की बालिकाओं को नवजीवन दिया है। आचार्य संत शिरोमणि ऋषि तुल्य माना। गांधीजी ने डर से जीत कर सत्य का साक्षात्कार किया. आधुनिक जीवन शैली में गांधी के दर्शन एवं विचार आज भी प्रासंगिक हैं। कुलसचिव अभिषेक कुमार बाजपेई ने कहा कि गांधीजी के चिंतन सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, सर्वोदय पर आधारित है। जो कार्य हम स्वयं नहीं कर सकते, उसकी अपेक्षा अन्य से नहीं करनी चाहिए और जो जिस कार्य की अपेक्षा करते हैं, उसे सबसे पहले स्वयं को करना होगा।

विश्वविद्यालय में हुए आयोजन में उपस्थित अतिथि व प्रबंधन।

Date: 01/08/2023, Edition: Jagdalpur, Page: 12
Source : https://epaper.patrika.com/

जनसेवा ही देशभक्ति, आत्म संतुष्टि और शक्ति : सैनी

जगदलपुर। शहीद महेंद्र शर्मा विश्वविद्यालय के बी.एड. अध्ययनशाला भवन में 31 जुलाई को गांधी जी के दर्शन एवं देशभक्ति पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पद्मश्री धर्मपाल सैनी उपस्थित रहे। इस अवसर पर अतिथि मुख्य अतिथि पद्मश्री धर्मपाल सैनी ने गांधी महात्मा गांधी के दर्शन पर अपने विचार रखते हुए बताया कि देशभक्ति का अर्थ केवल त्याग नहीं है, बल्कि देश हित में ज्ञान, वस्तु, चरित्र आदि का उत्पादन भी देशभक्ति है। उन्होंने देशभक्ति को सेवा माना और तत्कालीन मध्यप्रदेश राज्य के मालवा क्षेत्र में पूर्व से ही उनके द्वारा बालिकाओं की शिक्षा के लिए स्कूल संचालित किए जा रहे थे, अपने गुरु आचार्य संत विनोबा भावे के निर्देश पर बस्तर में बालिकाओं के शिक्षा के लिए बस्तर आए और बस्तर में बालिकाओं के शिक्षा की शुरुआत की। शुरुआती दौर में उन्हें बालिकाओं को शिक्षा देने के लिए काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, परंतु उनके दृढ़ इच्छा एवं जनकल्याण की भावना से प्रेरित होकर बस्तर के स्थानीय लोगों ने अपने बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए उनके सानिध्य में भेजा। ज्ञात हो कि कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव ने किया। विशिष्ट अतिथि अभिषेक कुमार बाजपेई, कुलसचिव उपस्थित रहे। इस अवसर पर विवि के मानवविज्ञान अध्ययनशाला के विभागाध्यक्ष डॉ स्वपन कुमार कोले, प्राध्यापक, राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ के समन्वयक डॉ डीएल पटेल, सहायक कुलसचिव प्रशासन सीएल टंडन सहित विवि के शिक्षक एवं छात्राएं उपस्थित रहे। इस अवसर पर पौधरोपण भी किया गया।

गांधी दर्शन क्लब का हो गठन : कुलसचिव

इस अवसर पर कुलसचिव अभिषेक बाजपेई ने कहा कि गांधी जी के चिंतन सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, सर्वोदय पर आधारित है, जो कार्य हम स्वयं नहीं कर सकते, उसकी अपेक्षा अन्य से नहीं करनी चाहिए और जो जिस कार्य की अपेक्षा करते हैं, उसे सबसे पहले स्वयं को करना चाहिए। उन्होंने छात्र-छात्राओं को स्वस्थ होकर गांधी दर्शन क्लब बनाने का आह्वान किया।

सैनी जैसे लोगों की बस्तर में जरूरत : कुलपति

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव ने पद्मश्री धर्मपाल सैनी के जन कल्याणकारी और बालिका शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यों की भूरी भूरी प्रशंसा की, उनके द्वारा किए गए कार्य अनुकरणीय हैं और बस्तर क्षेत्र में उनके द्वारा किए गए कार्य को आगे बढ़ाने के लिए सैनी की तरह ही लोगों की आवश्यकता है।

दैनिक भास्कर

बस्तर भास्कर 02-08-2023

सेवा ही देशभक्ति और शक्ति है: धर्मपाल सैनी

भास्कर न्यूज | जगदलपुर

बस्तर विश्वविद्यालय के बीएड अध्ययनशाला भवन में सोमवार को गांधीजी के दर्शन एवं देशभक्ति पर व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर पद्मश्री धर्मपाल सैनी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर मनोज कुमार श्रीवास्तव ने किया, विशिष्ट अतिथि अभिषेक कुमार बाजपेई, कुलसचिव उपस्थित रहे।

धर्मपाल सैनी

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के मानवविज्ञान अध्ययनशाला के विभागाध्यक्ष डॉ. स्वपन कुमार कोले, प्राध्यापक, राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ के समन्वयक डॉ. डीएल पटेल, विश्वविद्यालय के सहायक कुलसचिव (प्रशासन) और जनसंपर्क अधिकारी सीएल टंडन सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के छायाचित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया. तत्पश्चात मुख्य अतिथि धर्मपाल सैनी का स्वागत कुलपति द्वारा किया गया।

स्वागत उद्बोधन डीन स्टूडेंट वेलफेयर डॉ. आनंद मूर्ति मिश्रा द्वारा किया गया उनके द्वारा मुख्य अतिथि का परिचय दिया गया अतिथि पद्मश्री धर्मपाल सैनी ने महात्मा गांधी के दर्शन पर अपने विचार रखते हुए बताया कि देशभक्ति का अर्थ केवल त्याग नहीं है, बल्कि देश हित में ज्ञान, वस्तु, चरित्र आदि का उत्पादन भी देशभक्ति है।

उन्होंने देशभक्ति को सेवा माना और तत्कालीन मध्यप्रदेश राज्य के मालवा क्षेत्र में पूर्व से ही उनके द्वारा बालिकाओं की शिक्षा के लिए स्कूल संचालित किए जा रहे थे। उन्होंने यह भी कहा कि रोज रोज नया कार्य करें, नियमित सफाई कार्य करें, नई सोच भी एक नया कार्य है। गांधीजी ने भारत की स्वतंत्रता के पूर्व अंग्रेजियत को नकारा क्योंकि अंग्रेजियत में हिंसा और साम्राज्यवाद का बोध होता है। उन्होंने विषम परिस्थितियों में भी धैर्य, सहिष्णुता, मनोबल एवं सामर्थ्य नहीं खोया. भारत को ब्रिटिश हुकूमत से आजाद कराने के लिए उन्होंने सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह जैसे विकल्पों का सहारा लिया।